



Study AV Kand 9 Hindi

अथर्ववेद 9.3.25

प्राच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ।। 25 ।।

(प्राच्याः) पूर्व से (पूर्व दिशा प्रगति का संकेत देती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

व्याख्या :-

हम पूर्व दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?

पूर्व दिशा प्रगति का संकेत करती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

जीवन में सार्थकर्ता :-

एक भवन के लिए नमन किस प्रकार प्रस्तुत किये जायें?

इस सूक्त के सात मन्त्र सभी दिशाओं और इन दिशाओं की अपनी-अपनी शक्तियों को नमन और श्रद्धा व्यक्त करने के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें यह सुविधाजनक स्थान प्रदान किया है। जिसमें हम दिव्य शक्तियों की पूजा करते हुए निवास कर सकें। यह हमारे लिए सौभाग्यपूर्ण होगा कि हम अपने चारों तरफ की दिव्य शक्तियों के साथ जुड़कर रहें।

अथर्ववेद 9.3.26

दक्षिणाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ।। 26 ।।

(दक्षिणायाः) दक्षिण से (दक्षिण दिशा विशेषज्ञता का संकेत देती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

हम दक्षिण दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?
दक्षिण दिशा विशेषज्ञता का संकेत करती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

अथर्ववेद 9.3.27

प्रतीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ॥27॥

(प्रतीच्याः) पश्चिम से (पश्चिम दिशा भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से वापिस मुड़ने का संकेत करती है और प्रत्याहार की तरह एक पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा देती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

व्याख्या :-

हम पश्चिम दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?
पश्चिम दिशा भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से वापिस मुड़ने का संकेत करती है और प्रत्याहार की तरह एक पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा देती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

अथर्ववेद 9.3.28

उदीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ॥28॥

(उदीच्याः) उत्तर से (उत्तर दिशा प्रगति का संकेत देती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।



व्याख्या :-

हम उत्तर दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?

उत्तर दिशा प्रगति का संकेत करती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

अथर्ववेद 9.3.29

ध्रुवाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ॥29॥

(ध्रुवायाः) भूमि की तरफ से (भूमि की दिशा स्थायित्व और दृढ़ता का संकेत करती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

व्याख्या :-

हम भूमि की दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?

भूमि की दिशा स्थायित्व और दृढ़ता का संकेत करती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

अथर्ववेद 9.3.30

ऊर्ध्वाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ॥30॥

(ऊर्ध्वायाः) ऊपर की तरफ से (ऊपर की दिशा ब्रह्म ज्ञान की उच्च चेतना पर जीवन जीने का संकेत करती है) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

हम ऊपर की दिशा में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?

ऊपर की दिशा ब्रह्म ज्ञान की उच्च चेतना पर जीवन जीने का संकेत करती है जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

अथर्ववेद 9.3.31

दिशोदिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाहोभ्यः ॥31॥

(दिशो) सभी दिशाओं से (सभी दिशाएँ समग्र विकास और पूर्णता का संकेत करती हैं) (दिशः) दिशा (शालाया) इस भवन के (नमः) नमन, श्रद्धा (महिम्ने) महिमा, वैभव, महानता के लिए (परमात्मा की, इस भवन की) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (देवेभ्यः) दिव्य (शक्तियों और लोगों के लिए) (स्वाहा) आहुति, आशीर्वाद, सत्य वाणी को धारण करना, आनन्द (येभ्यः) सत्य वाणी का उच्चारण और उपदेश करने के लिए।

व्याख्या :-

हम सभी दिशाओं में अपना नमन और श्रद्धा क्यों प्रस्तुत करते हैं?

सभी दिशाएँ समग्र विकास और पूर्णता का संकेत करती हैं जिसके लिए हम परमात्मा और इस भवन की महिमा, वैभव और महानता के लिए अपना नमन और श्रद्धा प्रस्तुत करते हैं। हमारी आहुतियाँ दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए हों जिससे हमारे आनन्द के लिए हमें उनका आशीर्वाद और सत्य वाणियाँ प्राप्त हो सकें।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171